वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 458
ISBN 978-93-84003-70-8

सर्वसंकटहर
श्रीऋषभदेव स्तोत्र

–रचयित्री–

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी

– प्रकाशक –

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.
फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org,
www.encyclopediaofjainism.com
E-mail : jambudweeptirth@gmail.com

प्रथम संस्करण	वीर नि. सं. 2541	मूल्य
1100 प्रतियाँ	चैत्र कृष्णा नवमी	10/-रु.
	15 मार्च 2015	

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–
गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी
–: मार्गदर्शन :–
प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी
–: निर्देशन एवं सम्पादक :–
कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्ति श्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी
–: प्रबन्ध सम्पादक :–
जीवन प्रकाश जैन
सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग-ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

-कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्ति श्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी परम पूज्य 105 गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने बीसवी–इक्कीसवी शताब्दी में साहित्य सृजन की अविरल धारा को प्रवाहित करके जैनधर्म की अद्भुत प्रभावना की है तथा जैन साहित्य जगत पर भी अनंत उपकार किए हैं। विशेषरूप से आपकी लेखनी से प्रसूत पद्य साहित्य, स्तोत्र एवं पूजा विधान आदि से लोगों को भक्ति का मार्ग प्राप्त हुआ है।

यह 'सर्वसंकटहर श्रीऋषभदेव स्तोत्र' की लघुकाय पुस्तक बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। इसका प्रतिदिन पाठ करने से अनेक प्रकार के संकट दूर होंगे और सुख, शान्ति की प्राप्ति होगी। पूज्य माताजी की लेखनी का एक–एक शब्द मोती की माला के समान रहता है।

मांगीतुंगी में बन रही भगवान ऋषभदेव की 108 फुट उत्तुंग प्रतिमा का पंचकल्याणक निर्विघ्न सम्पन्न हो, मूर्ति निर्माण की पावन प्रेरिका चारित्र चन्द्रिका, दिव्यशक्ति, सिद्धान्त चक्रेश्वरी परम पूज्य आर्यिका शिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी का पावन सानिध्य प्राप्त हो, यही जिनेन्द्रदेव से मंगल प्रार्थना है और इस स्तोत्र का पाठ सभी के जीवन में मंगलकारी हो, यही मंगल भावना है।

प्रस्तावना

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जैनधर्म के वर्तमानकालीन प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव आदिब्रह्मा, युगादि पुरुष, आदिनाथ, पुरुदेव आदि अनेक नामों से जाने जाते हैं। तीर्थंकर भगवान के अनंतगुण होते हैं इनका तो नाम स्मरण ही अनेक संकटों को दूर कर देता है।

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने 'सर्वसंकटहर श्री ऋषभदेव स्तोत्र' की छोटी सी, किन्तु बहुत ही महत्त्वपूर्ण पुस्तक तैयार करके दी है। जिसे लोग अपनी बैग में रखकर घर से बाहर जाने में कार, गाड़ी, बस, ट्रेन, हवाईजहाज आदि में पढ़ सकते हैं। मंदिर, घर, दुकान, आफिस में भी प्रतिदिन इसका पाठ कर सकते हैं।

इस पुस्तक में सर्वप्रथम सर्वसंकटहर श्री ऋषभदेव स्तोत्र है जिसमें 50 काव्य हैं। इसमें पूज्य माताजी ने वर्तमान के अनेक प्रकार के कष्टों का वर्णन करते हुए लिखा है कि ऋषभदेव की वन्दना से वे सभी कष्ट स्वयं दूर हो जाते हैं और सुख की प्राप्ति होती है। इसके बाद श्री ऋषभदेव वन्दना (अष्टकर्म हरण वन्दना) है जिसमें ज्ञानावरणादि 8 कर्मों को नष्ट करने के लिए एवं क्षायिक सम्यक्त्व आदि 8 गुणों को पाने के लिए भगवान की वन्दना की है। फिर 'सर्वदोष निवारण स्तोत्र है जिसमें क्षुधा, तृषा आदि 18 दोषों को नष्ट करने के लिए भगवान की स्तुति की है। पुनः श्री

ऋषभदेव स्तुति है जिसमें ऋषभदेव का चरित गागर में सागर के समान समाहित है। इसके बाद संस्कृत में एकाक्षरी से लेकर अष्टाक्षरी तक और फिर अंत में 19 अक्षरी छंद में संस्कृत में श्री ऋषभदेव स्तोत्र है। यह संस्कृत में स्तोत्र रचना पूज्य माताजी की विशिष्ट ज्ञान प्रतिभा का द्योतक है। पुनः श्री ऋषभदेव स्तुति में पूज्य माताजी ने भावना भाई है कि हे नाथ ! आपको पाकर मैं महान हो गयी हूँ और जिनधर्मरूपी निधि को पाकर धनवान हो गई हूँ। स्तोत्र के बाद सर्वसंकटहर श्री ऋषभदेव के 48 मंत्र हैं फिर प्रशस्ति है।

मांगीतुंगी में पूज्य माताजी की प्रेरणा से 108 फुट उत्तुंग ऋषभेदव की प्रतिमा का निर्माण अतितीव्र गति से चल रहा है प्रतिमा पूर्ण होने के सम्मुख है। इसकी पंचकल्याणक की घोषणा भी पूज्य माताजी ने 11 से 17 फरवरी 2016 में करने की कर दी है। अतः इस महोत्सव वर्ष में श्री ऋषभदेव का गुणगान करने के लिए यह स्तोत्र रचना अति महत्त्वपूर्ण है। इसमें अंत में मेरे द्वारा रचित श्री ऋषभदेव एवं मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र से सम्बन्धित भजन भी हैं।

'सर्वसंकटहर श्री ऋषभदेव स्तोत्र' पुस्तक का पाठ सभी भव्य जीवों के जीवन में सुख, शांति को प्रदान करे, यही मंगल भावना है। पूज्य माताजी दीर्घायु हों और हम सभी को अपना मंगल आशीष प्रदान करती रहें, यही भगवान से मंगल प्रार्थना है।

दो शब्द

-आर्यिका सुव्रतमती

भगवान महावीर के शासनकाल में जैनसमाज की सर्वोच्च साध्वी युगप्रवर्तिका चारित्र चन्द्रिका, आर्यिका शिरोमणि, वर्तमानकालीन पिच्छीधारी सभी साधुओं में सबसे प्राचीन दीक्षित परमपूज्य 105 गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने जिनधर्म, जिनागम की विशेष प्रभावना की है। प्रतिक्षण पूज्य माताजी की यह भावना रहती है कि किस तरह से वर्तमान में सभी भव्य जीवों को धर्ममार्ग में लगाऊँ।

देव, शास्त्र, गुरु की भक्ति, स्तुति, पूजा आदि विशेष फल को देने वाली है। पूज्य माताजी की लेखनी में सरस्वती का वास है। जिनागम का सार बताने वाली, ज्ञानामृत का वितरण करने वाली, षट्खण्डागम की 16 पुस्तकों पर 'सिद्धान्तचिन्तामणि' नाम की संस्कृत टीका लिखने वाली, राष्ट्रगौरव, युगनायिका, सिद्धान्त-चक्रेश्वरी, वाग्देवी, डी. लिट् आदि अनेक उपाधियों से अलंकृत पूज्य माताजी इस युग के लिए वरदान हैं।

इस छोटी सी पुस्तक 'सर्वसंकटहर श्री ऋषभदेव स्तोत्र' का पाठ करने से मानव के जीवन में अनेक प्रकार के संकट दूर होंगे और सुख, शान्ति, की प्राप्ति होगी ऐसी मंगल भावना है। पूज्य माताजी के स्वस्थ एवं दीर्घ जीवन की कामना करते हुए पूज्य माताजी के चरणों में कोटि-2 नमन।

हार्दिक उद्गार

-आर्यिका स्वर्णमती

भगवान महावीर के शासनकाल में बीसवीं सदी में मुनि-परम्परा को जीवन्त करने वाले युगप्रवर्तक चारित्रचक्रवर्ती प्रथमाचार्य श्री शान्तिसागर जी महाराज हुए हैं। उनके 3 बार दर्शन करने वाली एवं उनसे अनुभव ज्ञान प्राप्त करने वाली और उनके प्रथम पट्टशिष्य चारित्र चूड़ामणि आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के कमकमलों से आर्यिका दीक्षा को प्राप्त करने वाली जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी हैं।

जहाँ पूज्य माताजी ने षट्खण्डागम, समयसार, नियमसार, अष्टसहस्री जैसे महान, क्लिष्ट ग्रंथ पर संस्कृत, हिन्दी टीकाएँ लिखीं, वहीं पर साधारण सभी भव्य जीवों के लिए छोटी-2 पुस्तकें बालविकास, जैन बालभारती, नारी आलोक जैसी पुस्तकें, जीवनदान, परीक्षा, प्रतिज्ञा, पतिव्रता जैसे उपन्यास लिखें और मंगल प्रभात, श्री गौतमस्वामी स्तोत्र, सर्वसंकटहर श्री ऋषभदेव स्तोत्र जैसी छोटी-2 पॉकेट साइज पुस्तकें भी प्रदान की हैं।

पूज्य माताजी के सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र को नतमस्तक करते हुए मैं पुनः पुनः उनके पावन चरणों में वन्दामि करती हूँ।

विषयानुक्रमणिका

1.	सर्वसंकटहर श्री ऋषभदेव स्तोत्र	9
2.	श्री ऋषभदेव वन्दना (अष्टकर्म हरण वंदना)	21
3.	सर्वदोष निवारण स्तोत्र (18 दोष निवारण)	29
4.	श्री ऋषभदेव स्तुति (पद्य में)	34
5.	श्री ऋषभदेव स्तोत्र (संस्कृत में)	36
6.	श्री ऋषभदेव स्तुति	39
7.	सर्वसंकटहर श्री ऋषभदेव मंत्र	42
8.	प्रशस्ति	48
9.	भजन-ऋषभदेव की मूर्ति प्यारी	49
10.	भजन-सबसे बड़ी मूर्ति का.....	50
11.	भजन-सारे जग में तेरी धूम.....	51
12.	भजन-सबसे ऊँची ऋषभदेव की.....	53
13.	भजन-मांगीतुंगी तीर्थ से आमंत्रण....	54
14.	**BHAJAN**-A holy message has come,	56

श्री ऋषभदेव जन्मजयन्ती-चैत्र कृष्णा नवमी (15 मार्च 2015) के शुभ अवसर पर 'श्री गौतम गणधर वर्ष' 2014-2015 के अन्तर्गत प्रकाशित।

सर्वसंकटहर

श्रीऋषभदेव स्तोत्र

–दोहा–

वर्तमान के बहुत विध, कष्ट स्वयं हो दूर।
ऋषभदेव को वंदते, मिले सौख्य भरपूर।।1।।

–शेर छंद–

जब मेघ अतीवृष्टि से भूजलमयी करें।
नदियों की बाढ़ में बहें जन डूबकर मरें।।
जो भक्त आप वंदते वे पुण्य योग से।
अतिवृष्टि अपने देश से वे दूर कर सकें।।1।।
नहिं मेघ बरसते सभी जल के लिए तरसें।
पशु पक्षी मनुज प्यास से निज प्राण को तजें।।
ऐसे समय में आप की भक्ती ही मेघ सम।
अमृतमयी जलवृष्टि से तर्पित करें जन मन।।2।।
दुर्भिक्ष हो अकाल हो असमय में जन मरें।
भगवन् ! तुम्हारी भक्ति से जन पाप परिहरें।।
होवे सुभिक्ष सब तरफ जब पुण्य घट भरें।
तब मेघ भी समय समय वर्षा सुखद करें।।3।।

धन से भरी तिजोरियाँ ताले लगा दिये।
डाकू लुटेरे चोर आये लूट ले गये।।
बहु श्रम से कमाया गया धन हानि जो होती।
प्रभु भक्ति से हानी न हो धन रक्षणा होती।।4।।
जो राज्यकर के हेतु ही अधिकारि राज्य के।
छापा व टैक्स आदि से धन लूट ले जाते।।
इस विध से राज्य भय से घिरें निर्धनी बनें।
प्रभु के चरणकमल नमे फिर से धनी बनें।।5।।
नाना प्रकार श्रम करें फिर भी न धन बढ़े।
दारिद्र से उन सामने संकट बड़े बड़े।।
परिवार के पोषण में भी असमर्थ हो रहें।
वृषभेष की भक्ती करें धन सम्पदा लहें।।6।।
तनु में ज्वरादि रोग हो पीड़ाएं हो घनी।
बहु औषधी लेते भी व्याधियां हो चौगुनी।।
भगवान ऋषभदेव की जो वंदना करें।
ज्वर शूल आदि रोग को वे क्षण में परिहरें।।7।।
जब पीलिया कुष्ठादि जलोदर भंगदरा।
नाना प्रकार रोग शोक हों भयंकरा।।

तुम नाम के जपे समस्त रोग नष्ट हों।
हे नाथ! आप भक्ति से जन पूर्ण स्वस्थ हों।।8।।
बहुविध के नेत्र रोग हों अंधा करें यदी।
औषधि व शल्यचिकित्सा से हो न लाभ भी।।
ऐसे समय में जो मनुष्य प्रभु शरण गहें।
हो नेत्र ज्योति स्वच्छ मन प्रसन्नता लहें।।9।।
जो प्राण को भी घातती कैंसर महाव्याधी।
अति कष्टदायि वेदना से हो न समाधी।।
तब भक्त आप मंत्र को जपते जो भाव से।
सब वेदना व व्याधि भी भगती हैं देह से।।10।।
हृद् रोग से पीड़ित मनुज न पावते साता।
बहुधन करें खर्चा परन्तु बढ़ती असाता।।
जिनराज पादकमल की लेते यदी शरण।
हों पूर्ण स्वस्थ नहीं हो अकाल में मरण।।11।।
मुनियों की जो निंदा करें घृणा करें कभी।
वे हों कुरूप निंद्यरूप पावते तभी।।
मन में सदा दुखी रहें यदि आप को नमें।
होवें सुरूप कामदेव सर्वसुख भजें।।12।।

–शंभुछंद–

स्त्री पुत्रादि स्वजन परिजन, जो अपने को अतिप्रिय होवें।
वे दूर बसें या मर जावें, तब इष्ट वियोग दुःखद होवे।।
उस समय चित संतप्त किए रोते विलाप करते प्राणी।
होते प्रसन्न क्षण भर में ही यदि मिल जावें प्रभु की वाणी।।13।।
शत्रू हों या प्रतिकूल स्वजन भार्या आदिक शत्रूसम हों।
इनका वियोग कैसे होवे ऐसी चिंता प्रतिक्षण मन हो।।
ऐसे अनिष्ट संयोगों से संतप्त हृदय प्रतिदिन रोवे।
जिनवर की भक्ती करने से निश्चिंत प्रसन्नमना होंवे।।14।।
घर में या व्यापारों में भी मन के प्रतिकूल क्रियाएं हों।
मानस पीड़ा होवे प्रतिदिन आकुलता हो व्याकुलता हो।।
प्रतिक्षण मनपीड़ा से तनु में, नानाविध रोग प्रगटता हो।
प्रभु की भक्ती से आधि नशे, मन में अतिशय प्रफुल्लता हो।।15।।
वचनों से प्रिय भी वचन कहें फिर भी जन जन अति क्रोध करें।
या जिह्वा में हो रोग विविध या गूंगे हों बहु दुःख भरें।।
इस विध वाचनिक कष्ट जो भी नश जाते प्रभुवर भक्ती से।
वचसिद्धि मिले सब जन वश हों, जिन भक्ती फल मिलता विधि से।।16।।
यह पुद्गल के परमाणु से निर्मित है काया अस्थिर है।
फिर भी इसमें कुछ पीड़ा हो आत्मा भी होता अस्थिर है।।

नानाविध कायिक कष्टों से छुटकारा पाते भक्तिक जन।
हे नाथ! आपके वंदन से सब मिट जाते जग के क्रंदन।।17।।
जो वायुयान से गगन गमन करते ऊपर में उड़ जाते।
यदि अकस्मात् दुर्घटना हो ऊपर से नीचे गिर जाते।।
प्रभु नाम जपें तत्क्षण ही तब, तनु में किंचित नहीं चोट लगे।
मरणान्तक पीड़ा से बचते, दीर्घायू हों दुःख दूर भगें।।18।।
जो रेल में बैठे अतिशीघ्र बहुतेक कोश यात्रा करते।
यदि एक्सीडेंट आदि होवे तो आकस्मिक मृत्यु लभते।।
जिनराज भक्ति का ही प्रभाव ऐसी बहुविध दुर्घटनाओं में।
परिपूर्ण सुरक्षित बच जाते, या एक्सीडेंट टलें क्षण में।।19।।
बस कार आदि यात्रा साधन सुख देते आज सभी को भी।
संघट्टन आदि बहुत विध की दुर्घटनाएँ होती हैं फिर भी।।
यदि नाम मंत्र जपते उस क्षण दुर्घटना से बच जाते हैं।
यदि मरें कदाचिद् फिर भी वे शुभ स्वर्ग सौख्य पा जाते हैं।।20।।
जो चलें तिपहिए, वाहनादि, उनके संघट्टन आदि विविध।
गिरने पड़ने से एक्सीडेंट, आदिक दुर्घटनाओं से नित।।
नाना आतंक दिखें जग में, प्रभु भक्ती से टल जाते हैं।
सब विध अकालमृत्यु टलती, भाक्तिक दुःख से बच जाते हैं।।21।।

दो पहिये के साइकिल आदिक, वाहन से चलते अकस्मात्।
बस ट्रक आदिक के टक्कर से, गिर जाते बहुविध कष्ट प्राप्त।।
प्रभु नाम मंत्र के जपते ही, किञ्चित नहिं चोट लगे तन में।
अपमृत्यु आदि भय टल जाते, मानव दीर्घायू हों जग में।।22।।
भू पर कंप कभी होता, बहुतेक मनुज मर जाते हैं।
घर ग्राम आदि भी नश जाते, बहुते पशु भी मर जाते हैं।।
प्राकृतिक कोप भूकम्प आदि दुर्घटनाएँ भी टल जाती हैं।
जो भक्त आपको नमते हैं, उनकी रक्षा हो जाती है।।23।।
नदियों में बाढ़ यदी आवे, कितने ही ग्राम डूब जाते।
कितने नर नारी पशु पक्षी, जल में डूबे तब मर जाते।।
इन आकस्मिक जल संकट से, भाक्तिक जन ही बच सकते हैं।
जिनदेवदेव का ही प्रभाव, ये संकट भी टल सकते हैं।।24।।
जो नदी, समुद्र, नहर आदिक, में अकस्मात् गिर जाते हैं।
तुम नाम मंत्र जपते तत्क्षण, वे सहसा ही तिर जाते हैं।।
जिनदेव भक्ति की महिमा ही, भवसागर भी तिर सकते हैं।
प्रभु आदीश्वर की भक्ती से, हम भी सब संकट हरते हैं।।25।।
बिच्छू आदिक विषधर जंतू, सर्पादिक काले नाग यदी।
हालाहल विष उगले डस लें, नहिं बचा सकें कोई वैद्य यदी।।

ऐसे भय यदी भयंकर भी, जीवन नाशक आ जाते हैं।
आदीश्वर जिनकी भक्ती से, निर्विष हो जीवन पाते हैं।।26।।
अष्टापद व्याघ्र सिंह आदिक, हिंसक पशुओं ने घेरा हो।
जीवन बचने की आश न हो, संकट का घोर अंधेरा हो।।
भय से भयभीत हुए प्राणी, यदि नाममंत्र प्रभु का जप लें।
तत्क्षण ही क्रूर जंतुगण भी, शान्ती भावों से मिलें जुलें।।27।।
हाथी, घोड़े, गौ, बैल आदि, पशुगण यदि हमला करते हैं।
सींगों वाले भयभीत करें, दौड़े मारें वध करते हैं।।
ऐसे प्राणीगण से भी नर, नहिं बाधा किञ्चित् पाते हैं।
जो मन में चिंते नाममंत्र, वे निर्भय हो बच जाते हैं।।28।।

–नाराचछंद–

जो विषाक्त गैस फैलती शरीर नाशती।
मानवों पशूगणों के प्राण को संहारती।।
श्री जिनेन्द्रदेव के पदाब्ज की सुवंदना।
सर्वगैस आदि कष्ट दूर होयं रंच मा।।29।।
आज जो रसोईघर में गैसपात्र जल रहे।
जो कभी फटें व अग्नि से अनेक को दहें।।
प्राण कष्टदायि चुल्लिकादि दुःख वारते।
जो जिनेन्द्र को नमें समस्त पाप टारते।।30।।

आज बम फटें कहीं उनके प्राणि मारते।
उग्रवादि लोग भी अनेक को संहारते।।
ग्राम सद्म भी बड़े बड़े हि बम गिरे नशें।
आप पाद वंदते समस्त आपदा नशें।।31।।
उग्रवादि लोग आज मानवों को मारते।
बेकसूर प्राणियों के प्राण को संहारते।।
मानसीक वेदना धरें अनेक नित्य ही।
नाम मंत्र आप्त का हरे अनेक भीति ही।।32।।
जो कुपुत्र या कुपुत्रियाँ सदैव दुःख दें।
मात पिता उनसे दुखी जन्म भार मानते।।
आप भक्ति से वही सपूत बन के सौख्य दें।
मात पिता धन्य हों जिनेंद्र भक्ति पुण्य से।।33।।
मानसीक कष्ट देहव्याधि आदि दुःख से।
कूप में गिरें विषादि खाय के मरा चहें।।
तुच्छयोनि हेतु आत्मघात है सुबुद्धि हो।
आप नाम के जपे हि पूर्ण आयु लाभ हो।।34।।
मृत्यु हो अकाल में न पूर्ण आयु पा सकें।
कर्म की उदीरणा से बहुविधे निमित बनें।।

नाथ पाद को नमें अपूर्व पुण्य को भरें।
दीर्घ आयु हो यहाँ समस्त कष्ट को हरें।।35।।
भूत औ पिशाच व्यंतरादि कष्ट दें घने।
डाकिनी व शाकिनी ग्रहादि भी निमित बनें।।
दुःख हो पिशाचग्रस्त आप वश्य ना रहें।
नाथ पाद वंदते समस्त कष्ट को दहें।।36।।

चौबोल छन्द

किंचित श्रम से धन ही धन हो, सब व्यापार सफल होते।
पुण्य उदय से हों उद्योगपति, सब जन के प्रिय होते।।
जिनभक्ती का ही माहात्म्य, जो धन से घर भण्डार भरें।
भक्तिक जन प्रभु संस्तुति कर, शीघ्र स्वात्मनिधि प्राप्त करें।।37।।
गृहलक्ष्मी अनुकूल रहे, पतिव्रत से घर को मोहे।
पति की अनुगामी बन करके, दान धर्म से नित सोहे।।
ऐसी पत्नी मिलती जिसको, वे पुण्यात्मा कहलाते।
ऋषभदेव की स्तुति का फल, इस भव परभव में पाते।।38।।
पुत्र पौत्र संतति मिलती नित, कुलदीपक संतान मिले।
मात पिता की कीर्ति बढ़ाकर, धर्मनिष्ठ हों स्वस्थ भले।।
भरत, बाहुबलि, राम सदृश सुत, ब्राह्मी सीता सम कन्या।
ऋषभदेव तीर्थंकर को नित, वंदत पाते जगवंद्या।।39।।

दीर्घ आयु पाते वे भविजन, जो प्रभु चरण कमल जजते।
अशुभ भाव से दूर रहें नित, जिनवर के गुण में रमते।।
मनुज देव योगी को पाते, सम्यग्दर्शन महिमा से।
अतः नमूं मैं भक्तिभाव से, उत्तम आयु मिले जिससे।।40।।
चारों ओर फैलती कीर्त्ती, सद्गुण से निज को भरते।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित से आत्मा को शोभित करते।।
कई जन्म के पुण्य योग से, ऐसा योग सुलभ होवे।
ऋषभदेव की संस्तुति करते, यश सौरभ प्रसरित होवे।।41।।
राज्यमान्यता प्राप्त करें सब, जन जन के अति प्रिय होते।
सब जन उनके गुण गाते ऐसी महिमा से खुश होते।।
जिनवर भक्ती का प्रभाव यह, सब जन संतर्पित करते।
और अधिक क्या जिनभक्ती से तीर्थंकर भी बन सकते।।42।।
जन जन भी आज्ञा पालें, ऐसी गरिमा को पाते हैं।
इस भव में इन्द्रादि सदृश, अतिशायि वैभव पाते हैं।।
ये सब ऋषभदेव वंदन का, उत्तम फल जग में माना।
भक्त बने भगवान स्वयं, ऐसा आश्चर्य जगत् जाना।।43।।
अंत समय में रोग वेदना, आर्तरौद्र दुर्ध्यान न हों।
क्रोध मान माया लोभादिक, राग द्वेष दुर्भाव न हों।।

देव शास्त्र गुरु पंचपरम गुरु इनका ही बस ध्यान प्रभो।
महामंत्र का मनन श्रवण हो, अंत समाधी मरण प्रभो!।।44।।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरण ये, रत्नत्रय शिवदाता हैं।
निश्चय औ व्यवहार मार्ग ये, परमानंद विधाता हैं।।
ऋषभदेव तीर्थंकर प्रभु की, भक्ति करें जो भव्य सदा।
वे ही तीन रत्न पा लेते, त्रिभुवन लक्ष्मी लें सुखदा।।45।।
उत्तम क्षमा सुमार्दव आर्जव, सत्य शौच संयम तप भी।
त्याग अकिंचन ब्रह्मचर्य ये, दश वरधर्म धरें यति ही।।
इन धर्मों को पाते वे ही, जो जिनवंदन नित करते।
ऋषभदेव के चरणकमल की, भक्ति से शिवपद लभते।।46।।
दर्शविशुद्धी विनय आदि, सोलह सुभावना मानी हैं।
तीर्थंकर पद की जननी ये, सर्वश्रेष्ठ जिनवाणी हैं।।
तीर्थंकर पदकमल वंदत, सदा भावना भाते हैं।
तीर्थंकर प्रकृती को बांधे, त्रिभुवनपति बन जाते हैं।।47।।

–शंभु छंद–

बहिरात्मा अन्तरआत्मा परमात्मा जीव त्रिविध मानें।
स्वपर भेदविज्ञानी मुनिवर, शुद्धात्मा को पहचानें।।
सतत ध्यान कर शुद्ध बनें वे, जो जिनचरण कमल षट्पद।
निजशुद्धात्मतत्त्वप्राप्ती हितु, मैं भी नित्य नमूँ जिनपद।।48।।

अतिवृष्टि अनावृष्ट्यादि कष्ट, जो मानव को दुःख देते हैं।
श्रीऋषभदेव की संस्तुति से, भविजन सब दुःख को मेटे हैं।।
नीरोग बनें दीर्घायू हों, सब सुख संपति भर लेते हैं।
यह जिनवंदन का ही प्रभाव, बहुयश सौरभ को देते हैं।।49।।

दोहा

ऋषभदेव स्तोत्र यह, संकटहर सुखदान।
गणिनी 'ज्ञानमती' रचित, पढ़ो सुनो मतिमान्।।50।।

सरस्वती मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं वद वद वाग्वादिनि भगवति सरस्वति ह्रीं नमः।।

श्री ऋषभदेव वंदना

(अष्टकर्महरण वंदना)

–दोहा–

प्रभु अनंत गुण के धनी, शुद्ध सिद्ध भगवंत।
मुख्य आठ गुण को नमूं, भक्ती भाव धरंत।।

(तर्ज–आवो बच्चों तुम्हें दिखायें.....)

(1)

आओ हम सब करें वंदना, ऋषभदेव भगवान की।
सिद्धशिला पर राज रहें जो, उन अनंत गुणखान की।।
जय जय आदिजिनं, जय जय आदिजिनं।
जय जय आदिजिनं, जय जय आदिजिनं।।1।।
दर्शन मोहनी है त्रयविध, चार अनंतानूबंधी।
मोहकर्म को नाश जिन्होंने, पाया क्षायिक समकित भी।।
इस गुण से अगणित गुण पाये, उन गुणमणि श्रीमान की।
सिद्ध शिला पर राज रहें जो, उन अनंत गुणखान की।।
जय जय आदिजिनं–4।।2।।

वर्ण स्पर्श गंध रस विरहित, शुद्ध अमूर्तिक आत्मा है।
जिनने प्रगट किया निज गुण को, वे प्रबुद्ध परमात्मा हैं।।
गुण गाथा हम गायें निशदिन, ज्योतीपुंज महान की।
सिद्ध शिला पर राज रहें जो, उन अनंत गुणखान की।।
जय जय आदिजिनं–4।।3।।

(2)

आवो हम सब करें वंदना ऋषभदेव भगवान की।
सिद्ध शिला पर राज रहें जो, उन अनंत गुणखान की।।
जय जय आदिजिनं–4।।4।।

ज्ञानावरण कर्म को नाशा, पूर्णज्ञान प्रगटाया है।
युगपत् तीन लोक त्रयकालिक, जान ज्ञान फल पाया है।।
शत इन्द्रों से वंद्य सदा जो, उन आदर्श महान की।
सिद्ध शिला पर राज रहें जो, उन अनंत गुणखान की।।
जय जय आदिजिनं–4।।5।।

चौदह गुणस्थान से विरहित, शुद्ध निरंजन आत्मा हैं।
जिनने निज का ध्यान किया है, वे विशुद्ध सिद्धात्मा हैं।।

मुनियों से भी वंद्य सदा हैं, उन प्रभु ज्योतिर्मान की।
सिद्ध शिला पर राज रहें जो, उन अनंत गुणखान की।।
जय जय आदिजिनं–4।।6।।

(3)

आवो हम सब करें वंदना, ऋषभदेव भगवान की।
सिद्ध शिला पर राज रहें जो, उन अनंत गुणखान की।।
जय जय आदिजिनं–4।।7।।

सर्व दर्शनावरण घात कर, केवलदर्शन प्रगट किया।
युगपत् तीन लोक त्रैकालिक, सब पदार्थ को देख लिया।।
जिनको गणधर गुरु भी ध्याते, उन दृष्टा भगवान की।
सिद्ध शिला पर राज रहें जो, उन अनंत गुणखान की।।
जय जय आदिजिनं–4।।8।।

चौदह जीवसमास सहित ये, संसारी जीवात्मा हैं।
इनसे विरहित नित्य निरंजन, शुद्ध बुद्ध परमात्मा हैं।।
योगीश्वर भी वंदन करते, सर्वदर्शि भगवान की।
सिद्धशिला पर राज रहे जो, उन अनंत गुणखान की।
जय जय आदिजिनं–4।।9।।

(4)

आवो हम सब करें वंदना, ऋषभदेव भगवान की।
सिद्ध शिला पर राज रहें जो, उन अनंत गुणखान की।।
जय जय आदिजिनं–4।।10।।
अंतराय शत्रू के विजयी, शक्ति अनंती प्रगटाई।
काल अनंतानंते तक भी, तिष्ठ रहे प्रभु श्रम नाहीं।।
हम भी करते नित उपासना, अनंत शक्तीमान की।
सिद्ध शिला पर राज रहें जो, उन अनंत गुणखान की।।
जय जय आदिजिनं–4।।11।।
दशों द्रव्य प्राणों से प्राणी, जन्म मरण नित करता है।
निश्चयनय से शुद्ध चेतना, प्राण एक ही धरता है।।
एक प्राण के हेतु वंदना, शुद्धचेतनावान की।
सिद्ध शिला पर राज रहें जो, उन अनंत गुणखान की।।
जय जय आदिजिनं–4।।12।।

(5)

आवो हम सब करें वंदना, ऋषभदेव भगवान की।
सिद्ध शिला पर राज रहें जो, उन अनंत गुणखान की।।
जय जय आदिजिनं–4।।13।।

सूक्ष्मत्व गुण पाया जिनने, नाम कर्म का नाश किया।
सूक्ष्म और अंतरिक्ष दूरवर्ती, पदार्थ को जान लिया।।
योगीश्वर के ध्यानगम्य जो, अचिन्त्य महिमावान की।
सिद्ध शिला पर राज रहें जो, उन अनंत गुणखान की।।
जय जय आदिजिनं–4।।14।।

आहारेन्द्रिय आयू श्वासोच्छ्वास वचन मन पर्याप्ती।
इनसे विरहित शुद्ध चिदात्मा, में असंख्य गुण की व्याप्ती।।
मुनि के हृदय कमल में तिष्ठें, उन गुणरत्न निधान की।
सिद्धशिला पर राज रहें जो, उन अनंत गुणखान की।
जय जय आदिजिनं–4।।15।।

(6)

आवो हम सब करें वंदना, ऋषभदेव भगवान की।
सिद्धशिला पर राज रहें जो, उन अनंत गुणखान की।
जय जय आदिजिनं–4।।16।।

आयु कर्म से शून्य जिन्होंने, अवगाहन गुण पाया है।
जिनमें सिद्ध अनंतानंतों, ने अवगाहन पाया है।।
भविजन कमल खिलाते हैं जो, उन अतुल्य भास्वान की।
सिद्धशिला पर राज रहें जो, उन अनंत गुणखान की।
जय जय आदिजिनं–4।।17।।

संज्ञा हैं आहार व भय, मैथुन परिग्रह संसार में।
इनसे शून्य सिद्ध परमात्मा, तृप्त ज्ञान आहार में।।
सिद्धों का वंदन जो करते मिले राह कल्याण की।
सिद्धशिला पर राज रहें जो, उन अनंत गुणखान की।
जय जय आदिजिनं–4।।18।।

(7)

आवो हम सब करे वंदना, ऋषभदेव भगवान की।
सिद्धशिला पर राज रहें जो, उन अनंत गुणखान की।
जय जय आदिजिनं–4।।19।।

ऊँच नीच विध गोत्रकर्म को, ध्यान अग्नि में भस्म किया।
अगुरूलघु गुण से अनंत युग, तक निज में विश्राम किया।।
त्रिभुवन के गुरु माने हैं जो, उन अविचल गुणवान की।
सिद्धशिला पर राज रहें जो, उन अनंत गुणखान की।
जय जय आदिजिनं–4।।20।।

चतुर्गती के नाना दुःखों, से जो जन अकुलाये हैं।
वे ही स्तुति भक्ती करने, चरणशरण में आये हैं।।
मैं भी भव–भव दुख से छूटूँ, भक्ती कर भगवान की।
सिद्धशिला पर राज रहें जो, उन अनंत गुणखान की।
जय जय आदिजिनं–4।।21।।

(8)

आवो हम सब करें वंदना, ऋषभदेव भगवान की।
सिद्धशिला पर राज रहें जो, उन अनंत गुणखान की।
जय जय आदिजिनं–4।।22।।

सात असाता द्विविध वेदनी, ध्यान अग्नि से जला दिया।
अव्याबाध सुखामृत पीकर, निज से निज को तृप्त किया।।
भक्ति नाव से भव्य तिरें जो, उन शुद्धात्म महान की।
सिद्धशिला पर राज रहें जो, उन अनंत गुणखान की।
जय जय आदिजिनं–4।।23।।

शारीरिक मानस आगंतुक, नाना दुःख उठाये हैं।
जो इन दुःखों से विरहित हैं, शरण उन्हीं की आये हैं।।
स्वात्म सुखामृत पीने हेतू, शरण सिद्ध भगवान की।
सिद्धशिला पर राज रहें जो, उन अनंत गुणखान की।
जय जय आदिजिनं–4।।24।।

(9)

आवो हम सब करें वंदना, ऋषभदेव भगवान की।
सिद्धशिला पर राज रहें जो, उन अनंत गुणखान की।
जय जय आदिजिनं–4।।25।।

शुक्लध्यान की अग्नि जलाकर, आठ कर्म को भस्म किया।
केवलज्ञान सूर्य को पाकर, आठ गुणों को व्यक्त किया।।
सिद्धों का जो वंदन करते, मिले राह कल्याण की।
सिद्धशिला पर राज रहें जो, उन अनंत गुणखान की।
जय जय आदिजिनं–4।।26।।

यह अपार भवसागर भव्यों, दुःख नीर से भरा हुआ।
इसको पार करें हम सब जन, भक्ति नाव अवलंब लिया।।
सिद्धों का जो वंदन करते, मिले राह कल्याण की।
सिद्धशिला पर राज रहें जो, उन अनंत गुणखान की।
जय जय आदिजिनं–4।।27।।

–दोहा–

ऋषभदेव की वंदना, अष्टकर्म क्षय हेतु।
'ज्ञानमती' कैवल्य हितु, नमूं नमूं शिर टेक।।28।।

सर्व दोष निवारण स्तोत्र

(१८ दोष निवारण)

–सोरठा–

दोष अनंतानंत, त्रिभुवन जन में व्याप्त हैं।
आप किया उन अंत,भक्ति भाव से मैं नमूं।।1।।

–भुजंगप्रयात छंद–

क्षुधा व्याधि पीड़ा करे सर्व जन को।
ये आहार संज्ञा हरें घातिहर जो।।
प्रभो केवली के असाता उदय भी।
फले सौख्य में मैं नमूँ नित उन्हें ही।।1।।
तृषा वेदना से पिपासित सभी हैं।
प्रभो आपने स्वात्म अमृत पिया है।।
इसे नाशने हेतु प्रभु को नमूँ मैं।
सदा साम्य पीयूष रुचि से चखूँ मैं।।2।।
महा दोष भीती सभी को सतावे।
प्रभू ने सभी भय डराकर भगाये।।
नमूँ सात भय नाश हेतू तुम्हीं को।
भजूँ सात उत्तम परं स्थान ही को।।3।।

महा क्रोध अग्नी दहे सर्व जग को।
प्रभू ने महाशांति से नाशा उसको।।
इसी क्रोध आश्रित सभी दोष आते।
नमूँ आप को क्रोध को मूल नाशें।।4।।
चिता से अधिक दुःख चिंता करे है।
तनू स्वास्थ्य को हर महा दुख भरे है।।
इसे मूल से आपने नष्ट कीना।
नमूँ मैं न चिंता कभी हो हृदय मा।।5।।
जरा जर्जरी देह करके सुखावे।
इसे नाश कर मूल से सौख्य पावें।।
प्रभो केवली आपको ही नमूँ मैं।
इसे नाश के स्वात्म सुख को भजूँ मैं।।6।।
सदा राग संसार में ही भ्रमावे।
प्रभो आपमें राग मुक्ती दिलावे।।
तथापी तुम्हीं ने सभी राग नाशे।
नमूँ भक्ति से तो अशुभ राग भागे।।7।।
महा मोह सम्राट से सब दुखी हैं।
इसे मूल से प्रभु उखाड़ा सुखी हैं।।

इसी मोह को नाश हेतू नमूँ मैं।
महा ध्वांत हर ज्ञान ज्योती भजूँ मैं।।8।।
करोड़ों भरे रोग इस देह में हैं।
प्रभू रोग को नाश करके सुखी हैं।।
विविध भांति के रोग नित कष्ट देते।
तुम्हें वंदते ये मुझे छोड़ देते।।9।।
महामल्ल मृत्यू ने त्रैलोक्य जीता।
इसे जीत तुम मुक्ति लक्ष्मी गृहीता।।
नमें आपको सर्व दुख के जयी हों।
वही लोक में शीघ्र मृत्युंजयी हों।।10।।
पसीना न तन में प्रभू आप के हो।
प्रभो केवली आपके ये नहीं हो।।
इसे मूल से जो हरें वीतरागी।
उन्हीं को नमूँ मैं बनूं सौख्यभागी।।11।।
प्रभो! एक क्षण में त्रयी लोक लोका।
नहीं ''खेद'' श्रम रंच भी आपको था।।
विषादो महादोष जीता तुम्हीं ने।
नशे दोष मेरा नमूँ भक्ति से मैं।।12।।

महामद कहें आठ विध या असंख्यें।
उन्हीं से लहें नीचगति जीव सब ये।।
हरें मान उनको सभी इंद्र वंदे।
नमूँ आपको सर्वमद को विखंडे।।13।।
रती दोष से प्रीति हो इष्ट पर में।
इसे नाश निज में धरी प्रीति प्रभु ने।।
प्रभू केवली प्रीति नाहीं किसी में
तथापी जगत हित करो नित नमूँ मैं।।14।।
कुतूहलमयी विश्व को देख करके।
करें जोऽतिविस्मय हरें पूर्ण सुख वे।।
सभी कर्मकृत फेर आश्चर्य कैसा।
नमूँ भक्ति से सौख्य हो आप जैसा।।15।।
जो निद्रा के वश वो स्वयं को न देखें।
निजातम दरश पूर्ण को रोक ले ये।।
इसे नष्टकर सर्व जग को विलोका।
नमूँ मैं दरश प्राप्त होवे प्रभू का।।16।।

अनंतों दफे जन्म धर-धर दुःखी मैं।
न हो जन्म फिर से करूँ यत्न वो मैं।।

तुम्हीं ने पुनर्जन्म नाशा जगत में।
अतः नित नमूं तुम चरण नाथ अब मैं।17।।

अरतिदोष से आकुलित चित्त होवे।
इसे नाशकर आपने कर्म धोये।।
यही दोष मुझको सदा दुःख देता।
नमूँ आपको ये भगे शीघ्र भीता।।18।।

–शंभु छंद–

इन दोष अठारह ने जग में, सबको दुख दे दे वश्य किया।
इनसे बच सका नहीं कोई इन त्रिभुवन में अधिपत्य किया।।
जो इनको जीते वे 'जिनेन्द्र', सौ इंद्रों से वंदित जग में।
'सज्ज्ञानमती' देवें मुझको, हर दोष भरें गुण वे मुझमें।।19।।

सर्वसिद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवाय सर्वसिद्धिकराय
सर्वसौख्यं कुरु–कुरु ह्रीं नमः।

श्री ऋषभदेव स्तुति

शंभुछंद

हे आदिनाथ! हे आदीश्वर! हे ऋषभ जिनेश्वर! नाभिललन!
पुरुदेव! युगादि पुरुष ! ब्रह्मा, विधि और विधाता मुक्तिकरण।।
मैं अगणित बार नमूँ तुमको, वन्दूँ ध्याऊँ गुणगान करूँ।
स्वात्मैक परम आनन्दमयी, सुज्ञान सुधा का पान करूँ।।1।।

आषाढ़ बदी दुतिया तिथि थी, मरुदेवी गर्भ पधारे थे।
श्री ह्री धृति आदि देवियों ने, माता के चरण पखारे थे।।
शुभ चैतबदी नवमी तिथि थी, भगवान यहाँ जब थे जन्में।
तब मेरु सुदर्शन के ऊपर, अभिषेक किया था इन्द्रों ने।।2।।

वो घड़ी धन्य थी धन्य दिवस, धन धन्य अयोध्या नगरी थी।
श्री नाभिराज भी धन्य तथा, तब धन्य प्रजा भी सगरी थी।।
प्रभु ने असि मसि आदिक क्रिया, उपदेशी आदि विधाता थे।
थे युग के आदिपुरुष ब्रह्मा, श्रावक मुनि मार्ग विधाता थे।।3।।

थे कनक वर्ण धनु पंच शतक, तनु वे युग के अवतारी थे।
आयू चौरासी लाख पूर्व, धारक वृष लक्षण धारी थे।।
सब परिग्रह ग्रंथी को तजकर, निर्ग्रंथ दिगम्बर रूप धरा।
वह चैत्र वदी नवमी शुभ थी, जिस दिन प्रभु ने कचलोंच करा।।4।।

षट् मास योग में लीन रहे, लंबित भुज नासादृष्टी थी।
निज आत्म सुधारस पीते थे, तन से बिल्कुल निर्ममता थी।।
फिर ध्यान समाप्त किया प्रभु ने, आहार विधी बतलाने को।
भवसिंधू में डूबे जन को, मुनिमार्ग सरल समझाने को।।5।।

षट् मास भ्रमण करते-करते, प्रभु हस्तिनागपुर में आये।
सोमप्रभ नृप श्रेयांस तभी, आहार दान दे हर्षाये।।
रत्नों की वर्षा हुई गगन से, सुरगण मिल जयकार किया।
धन-धन्य हुई वैसाख सुदी, अक्षय तृतिया आहार हुआ।।6।।

जब आप क्षपक श्रेणी चढ़कर, घाती पर ध्यान चक्र छोड़ा।
एकादशि फाल्गुन कृष्णा थी, केवलश्री से नाता जोड़ा।।
त्रिभुवन में ज्ञान लता फैली, भविजन को छाया सुखद मिली।
फिर माघ कृष्ण चौदश के दिन, मुक्तिश्री प्रभु के गले मिली।।7।।

क्रोधादिक रिपु को जीत प्रभो, स्वात्मा से जनित सुखामृत को।
पीकर अत्यर्थतया निशदिन, भव से सु निकाला आत्मा को।।
त्रिभुवन के मस्तक पर जाकर, अब तक व अनंते कालों तक।
ठहरेंगे वे पुरुदेव! मुझे, शुभ ''ज्ञानमती'' श्री देवें झट।।8।।

श्रीऋषभदेव स्तोत्र

श्रीछन्दः – (1 अक्षरी)
ॐ, मां। सोऽ-व्यात्।।1।।

स्त्रीछन्दः – (2 अक्षरी)
जैनी, वाणी। सिद्धिं, दद्यात्।।2।।

केसाछन्दः – (3 अक्षरी)
गणीन्द्र!, त्वदंघ्रिं। नमामि, त्रिकालं।।3।।

मृगीछन्दः – (3 अक्षरी)
श्री-जिनैः, संततं। मन्मनः, पूयताम्।।4।।

नारीछन्दः – (3 अक्षरी)
श्री-देवो, नाभेयः। वंदेऽहं, तं मूर्ध्ना।।5।।

कन्याछन्दः – (4 अक्षरी)
पूः साकेता, पूता जाता। त्वत्सूतेः सा, सेंद्रैर्मान्या।।6।।

व्रीडाछन्दः – (4 अक्षरी)
महासत्यां, मरुदेव्यां। सुतोऽभूस्त्वं, जगत्पूज्यः।।7।।

लासिनीछन्दः – (4 अक्षरी)
युगादिजो, जिनेश्वरः। ददातु मे, शिवश्रियं।।8।।

सुमुखीछन्दः—(4 अक्षरी)

नाभिनृपः, तेऽस्ति पिता। आदिजिनः, पातु मम।।9।।

सुमतिछन्दः—(4 अक्षरी)

सुखकारी, भवहारी। पुरुदेवो, वस मेऽन्तः।।10।।

समृद्धिछन्दः—(4 अक्षरी)

ज्ञानसिंधुं, सर्वबंधुं। सर्व सिद्ध्यै, नौमि नित्यं।।11।।

पंक्तिछन्दः—(5 अक्षरी)

हाटकवर्णं, सद्गुण-पूर्णम्।
सिद्धिवधूस्त्वां, सा स्म वृणीते।।12।।

शशिवदनाछन्दः—(6 अक्षरी)

मुनिनुतपादः, त्रिभुवननाथः।
विगलितमोहः, निजसुखमाप्नोत्।।13।।

मदलेखाछंदः—(7 अक्षरी)

देवेन्द्रैः परिपूज्यो, योगीन्द्रैरनुचिन्त्यः।
चक्रेशैरभिवंद्यो, वंदे तं वृषभेशम्।।14।।

अनुष्टुप्छन्दः—(8 अक्षरी)

आषाढेऽसितपक्षे स्याद्, द्वितीया तिथिरुत्तमा।
सर्वार्थसिद्धितश्च्युत्वा, मातुर्गर्भे समागतः।।15।।

नवम्यां चैत्रकृष्णे त्वं, जन्म प्राप्य प्रजापतिः।
ब्रह्मा सृष्टा विधाताभूद्, युगादौ तीर्थनायकः।।16।।

चैत्रकृष्णे नवम्यां हि, स्वयंभूर्दीक्षितोऽभवत्।
फाल्गुनेऽसितपक्षेऽभू-देकादश्यां सुकेवली।।17।।

माघकृष्णे चतुर्दश्यां, कैलाशे गिरिमस्तके।
निर्वृतिं परमां लब्ध्वा, सिद्धिकांतापति-र्बभौ।।18।।

आयुश्चतुरशीत्यामा, लक्षपूर्व-प्रमाणकः।
इक्ष्वाकुवंशभास्वान् यो, पुरुदेवो पुनातु मे।।19।।

द्विसहस्रकरोत्तुंगो, वृषभो वृषलाञ्छनः।
जीयात् त्रैलोक्यनाथोऽसौ, स्याद्वादामृतशासनः।।20।।

शार्दूलविक्रीडितछन्दः—(19 अक्षरी)

यः क्रोधादिरिपून् विजित्य सहसा, स्वात्मोत्थ-सौख्यामृतं।
पायं पायमहर्निशं भवभयात्, स्वात्मानमुद्धृत्य वै।।
त्रैलोक्याग्रपदे धृतश्च, निवसत्यद्याप्यनंतावधि।
दिश्यात् श्रीऋषभो स एष भगवान्, मे ज्ञानमत्यै श्रियं।।21।।

श्री ऋषभदेव स्तुति

–दोहा–

भूत भावि तीर्थेश की, चौबीसी आनन्त्य।
पुरी अयोध्या में कही, नमूं नमूं जगवंद्य।।1।।

–शेरछंद–

जय जय श्रीपुरुदेव नाभिराय के नंदा।
जय जय युगादिदेवदेव प्रथम जिनंदा।।
हे नाथ! तुम्हें पाय मैं महान हो गया।
जिनधर्म निधी पाय मैं धनवान हो गया।।1।। टेक।।

प्रभु आपने जीने की कला सबको सिखायी।
असि मषि कृषि वाणिज्य आदिक्रिया बताई।।हे नाथ.।।2।।

ब्राह्मी व सुंदरी को विद्याध्ययन कराया।
ब्राह्मी लिपी व गणित ज्ञान जगत ने पाया।।हे नाथ.।।3।।

सब पुत्र को संपूर्ण विद्या दान दिया था।
राजा बनाके राजनीति ज्ञान दिया था।।हे नाथ.।।4।।

नीलांजना के नृत्य से विरक्त हुये थे।
माता–पिता परिवार सभी त्याग दिये थे।।हे नाथ.।।5।।

रानी यशस्वती सुनंदा को भी तजा था।
सुत इक सौ एक दो सुताओं को भी तजा था।।हे नाथ.।।6।।

प्रभु सिद्ध की साक्षी से मुनिनाथ हुये थे।
इक सहस वर्ष बाद केवलज्ञानि हुये थे।।हे नाथ.।।7।।

प्रभु के समवसरण में थीं बारह सभा बनीं।
जिसमें असंख्य भव्य सुन रहे थे जिनध्वनी।।हे नाथ.।।8।।

श्री ऋषभसेन आदी गणधर थे चौरासी।
मुनिराज चौरासी हजार, स्वात्म विकासी।।हे नाथ.।।9।।

ब्राह्मी प्रमुख गणिनी थीं आर्यिकाओं में प्रथम।
थीं साढ़े तीन लाख आर्यिकायें स्वच्छमन।।हे नाथ.।।10।।

त्रयलाख सु श्रावक व पाँच लाख श्राविका।
चक्री भरत सम्राट वहां मुख्य थे श्रोता।।हे नाथ.।।11।।

जो चार सहस नृपति दीक्षा भ्रष्ट हुये थे।
वे तुम शरण में आके शुद्ध स्वस्थ हुये थे।।हे नाथ.।।12।।

जो थे मरीचि भ्रष्ट अन्त्य तीर्थकर हुये।
प्रभु देशना परंपरा से वीर बन गये।।हे नाथ.।।13।।

प्रभु आप ही अनंतानंत गुणों के धनी।
प्रभु लोक औ अलोक के द्रष्टा कहें मुनी।।हे नाथ.।।14।।

वर ज्ञानदर्श सौख्य वीर्य अगुरुलघु थे।
अवगाहना सूक्ष्मत्व अव्याबाध सुगुण थे।।हे नाथ.।।15।।

इन आठ गुण से आप सिद्धिनाथ कहाये।
पुनरागमन से रहित त्रिजगनाथ कहाये।।हे नाथ.।।16।।

सब अतिशयों से पूर्ण दोषशून्य ईश हो।
ब्रह्मा महेश विष्णु नमाते हैं शीश को।।हे नाथ.।।17।।

प्रभु आप कीर्ति आज सर्व ग्रंथ गा रहे।
तुम भक्ति से समस्त इष्ट सिद्धि पा रहे।।हे नाथ.।।18।।

हे नाथ! इसी हेतु आप शरण में आया।
कैवल्य 'ज्ञानमती' हेतु माथ नमाया।।हे नाथ.।।19।।

–दोहा–

नाथ! आप गुणरत्न को, गिनत न पावें पार।
तीन रत्न के हेतु मैं, नमूं अनंतों बार।।20।।

सर्वसंकटहर
श्रीऋषभदेव मंत्र

ॐ ह्रीं अतिवृष्टि–उपद्रवनाशनसमर्थाय श्रीऋषभदेव-तीर्थंकराय नमः।।1।।

ॐ ह्रीं अनावृष्टि–उपद्रवनाशनसमर्थाय श्रीऋषभदेव-तीर्थंकराय नमः।।2।।

ॐ ह्रीं दुर्भिक्षोपद्रवनाशनसमर्थाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।3।।

ॐ ह्रीं चोरलुंटकादि–उपद्रवनिवारकाय श्रीऋषभदेव-तीर्थंकराय नमः।।4।।

ॐ ह्रीं आयकरादिराज्यभयोपद्रवनिवारकाय श्रीऋषभ-देवतीर्थंकराय नमः।।5।।

ॐ ह्रीं दारिद्रदुःखविनाशकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।6।।

ॐ ह्रीं ज्वरशूलरोगादिनिवारकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।7।।

ॐ ह्रीं कामलाकुष्ठजलोदरभगंदरादिव्याधिविनाशकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः ।।8।।

ॐ ह्रीं नानाविधनेत्ररोगविनाशकाय श्रीऋषभदेव-तीर्थंकराय नमः।।9।।

ॐ ह्रीं प्राणघातकैन्सरमहाव्याधिविनाशकाय श्रीऋषभ-देवतीर्थंकराय नमः।।10।।

ॐ ह्रीं हृदयरोगपीड़ानिवारकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।11।।

ॐ ह्रीं कुरूपादिकष्टनिवारकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।12।।

ॐ ह्रीं प्राणघातक–इष्टवियोगजदुःखनाशकाय श्रीऋषभ-देवतीर्थंकराय नमः।।13।।

ॐ ह्रीं अनिष्टसंयोगमहादुःखशातनाय श्रीऋषभ-देवतीर्थंकराय नमः।।14।।

ॐ ह्रीं सर्वमानसिकतापविनाशकाय श्रीऋषभदेव-तीर्थंकराय नमः।।15।।

ॐ ह्रीं सर्ववाचनिककष्टनिवारकाय श्रीऋषभदेव-तीर्थंकराय नमः।।16।।

ॐ ह्रीं नानाविधकायिककष्टशातनाय श्रीऋषभदेव-तीर्थंकराय नमः।।17।।

ॐ ह्रीं सर्ववायुयानदुर्घटनाकष्टनिवारकाय श्रीऋषभदेव-

तीर्थंकराय नमः।।18।।

ॐ ह्रीं सर्वलौहपथगामिनीदुर्घटनादिभयनिवारकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।19।।

ॐ ह्रीं सर्वचतुष्चक्रिकादुर्घटनादिसंकटमोचनाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।20।।

ॐ ह्रीं सर्वत्रिचक्रिकादुर्घटनादिकष्टनिवारकाय श्रीऋषभ-देवतीर्थंकराय नमः ।।21।।

ॐ ह्रीं सर्वद्विचक्रिकादुर्घटनातंकनिवारकाय श्रीऋषभदेव-तीर्थंकराय नमः।।22।।

ॐ ह्रीं भूकम्पदुर्घटनानिवारकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।23।।

ॐ ह्रीं नदीपूरप्रवाहसंकटमोचनाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।24।।

ॐ ह्रीं नदीसमुद्रादिपतनकष्टनिवारकाय श्रीऋषभदेव-तीर्थंकराय नमः।।25।।

ॐ ह्रीं वृश्चिकसर्पादिविषधरविषनिर्णाशनाय श्रीऋषभ-देवतीर्थंकराय नमः।।26।।

ॐ ह्रीं अष्टापदव्याघ्रसिंहादिक्रूरहिंसकजंतुभयनिवारकाय श्रीऋषभदेव–तीर्थंकराय नमः।।27।।

ॐ ह्रीं गजाश्वगोवृषभादिप्राणिगणभयविनाशकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः ।।28।।

ॐ ह्रीं विषाक्तवाष्पक्षरणादिसंकटवारकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।29।।

ॐ ह्रीं वाष्पचुल्लिकादिदुर्घटनाकष्टनिवारकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।30।।

ॐ ह्रीं बमविस्फोटकादि–आकस्मिकसंकटनिवारकाय श्रीऋषभदेव–तीर्थंकराय नमः।।31।।

ॐ ह्रीं आतंकवादिजनकृत्–आकस्मिकमरणादिभयविनाशकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।32।।

ॐ ह्रीं कुसंतानकष्टनिवारकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।33।।

ॐ ह्रीं कूपनदीपतनविषादिभक्षणनिमित्तापघातभावनिवारणाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।34।।

ॐ ह्रीं नानाविधदुर्घटनादिनाकालमृत्युनिवारणाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।35।।

ॐ ह्रीं भूतपिशाचव्यंतरादिबाधानिवारकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।36।।

ॐ ह्रीं बहुविधव्यापारसफलताकारकाय श्रीऋषभ-

देवतीर्थंकराय नमः।।37।।

ॐ ह्रीं उभयकुलकमलविकासिनीधर्मपत्नीप्रापकपुण्यप्रदायकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।38।।

ॐ ह्रीं पुत्रपौत्रादिकुलदीपकसंततिप्रापकपुण्यप्रदायकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।39।।

ॐ ह्रीं दीर्घायुप्रापकपुण्यप्रदायकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।40।।

ॐ ह्रीं चतुर्दिक्कीर्तिसौरभव्यापकपुण्यप्रापकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।41।।

ॐ ह्रीं राज्यमान्यतादिप्रशंसनगुणप्रापणपुण्यप्रदायकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः ।।42।।

ॐ ह्रीं आज्ञापालनविभवप्रदायकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।43।।

ॐ ह्रीं अन्त्यसमाधीमरणफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।44।।

ॐ ह्रीं व्यवहारनिश्चयरत्नत्रयप्रदायकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।45।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशधर्मप्रदायकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः ।।46।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिसोलहकारणभावनाफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः ।।47।।

ॐ ह्रीं अन्तरात्मस्वरूपनिजशुद्धात्मध्यानकारिपदप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।48।।

स्वास्थ्य मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहिपत्ताणं
आरोग्यलाभं कुरु कुरु स्वाहा।

प्रशस्ति

–दोहा –

ऋषभदेव तीर्थेश को, नमूँ अनंतों बार।
जिनकी भक्ती विश्व में, सब जन को सुखकार।।1।।

हस्तिनागपुर क्षेत्र पर, जंबूद्वीप विख्यात।
अतिशय जिनमंदिर यहाँ, अखिल विश्व में ख्यात।।2।।

चारित्र चक्रवर्ती गुरू, शांतिसागराचार्य।
उनके पट्टाधीश श्री, वीरसागराचार्य।।3।।

उनकी शिष्या आर्यिका, ज्ञानमति जग मान्य।
गणिनी मैंने संकलित, किया स्तोत्र महान।।4।।

जब तक जग में सौख्यप्रद, जिनशासन गुणवृंद।
ऋषभदेव स्तोत्र यह, तब तक हो सुखकंद।।5।।

।।इति मंगलं भूयात्।।

भजन

रचयित्री-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज –राम जी निकली.....

ऋषभदेव की मूर्ति प्यारी, बने पर्वत पे ऊँची निराली-निराली।
धरती से सोलह सौ फुट ऊँचाई, पर है अखंड शिला एक प्यारी।
ऋषभदेव की मूर्ति प्यारी.....।।टेक.।।
है ऐतिहासिक निर्वाण भूमि। निन्यानवे कोटि मुनि सिद्धभूमी।।
महाराष्ट्र का सम्मेदशिखर है। श्री मांगीतुंगी तीरथ प्रवर है।।
प्राचीन तीरथ, मुनियों की कीरत, बतलाती है वह धरती निराली।
ऋषभदेव की मूर्ति प्यारी.....।।1।।
गणिनीप्रमुख ज्ञानमती माताजी ने। कर ध्यान एवं तपस्या गिरी पे।।
दी प्रेरणा मूर्ति निर्माण होवे। जिनसंस्कृति कीर्तीमान होवे।
गुरुप्रेरणा से, भक्तों के धन से, साकार हुई योजना यह निराली।
ऋषभदेव की मूर्ति प्यारी.....।।2।।
हो कार्य सिद्धी बन जाए प्रतिमा। श्री एक सौ आठ फुट ऊँची प्रतिमा।।
सब मिल करो मंत्र का जाप्य भक्तों। निर्विघ्न हो 'चंदना' कार्य भक्तों।
देखेंगे हम भी, देखोगे तुम भी, पर्वत पे प्रगटेगी जब प्रतिमा प्यारी।
ऋषभदेव की मूर्ति प्यारी.....।।5।।

भजन

रचयित्री-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज–जब से प्रभु दर्श मिला.....

सबसे बड़ी मूर्ति का, मांगीतुंगी तीर्थ का,
दुनिया में नाम हो रहा है, मूर्ति का निर्माण हो रहा है।।टेक.।।

ऋषभदेव प्रभुजी की प्रतिमा-2।
बनेगी धरा की यह गरिमा-2।।
जैन संस्कृति की धरोहर-2।
होगी यह सचमुच मनोहर-2।।
देखो जा के पास में, भक्ति लेके साथ में,
पर्वत पे काम हो रहा है, मूर्ति का निर्माण हो रहा है।।1।।

गणिनी माता ज्ञानमती जी-2।
प्रेरणा मिली है उन्हीं की-2।।
भक्त सभी, उसमें जुट पड़े-2।
सबके, भाव दान में बढ़े-2।।
तुम भी प्रभु का ध्यान करो, जितना बने दान करो,
सबसे बड़ा काम हो रहा है, मूर्ति का निर्माण हो रहा है।।2।।

प्रतिमा इक सौ, आठ फुट की है-2।
विश्व की अनमोल यह कृती है-2।।
भाव है ये ''चन्दनामती''-2।
शीघ्र बनके प्रगट हो मूर्ती-2।।
हो प्रतिष्ठा ठाठ से, हम सभी हों साथ में,
सबको यही भान हो रहा है, मूर्ति का निर्माण हो रहा है।।3।।

भजन

रचयित्री-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज–सारे जग का तू सरताज .....

सारे जग में तेरी धूम-बाबा हो बाबा, सारे जग में तेरी
धूम-बाबा हो बाबा।
सबसे ऊँची तेरी प्रतिमा, मांगीतुंगी तीर्थ की महिमा,
बढ़ गई ज्ञानमती की गरिमा।।सारे.।।
तीर्थंकर प्रथम इस धरा के हो तुम।
कर्मयुग के प्रभो आदिब्रह्मा हो तुम।।
तुमने मोक्षमार्ग बतलाया, जग को जीवनकला सिखाया,
आदिब्रह्मा तू कहलाया।।सारे.।।1।।
मांगीतुंगी में प्रतिमा तेरी बन गई।
ज्ञानमति माता की प्रेरणा मिल गई।।
दुनिया भर में सबसे ऊँची, मूरति देखो बनी अनूठी,
इनसे सुन्दर छवी न दूजी।।सारे.।।2।।
बड़ी प्रतिमा की सब ओर जयकार है।
नाभिनन्दन को मेरा नमस्कार है।।

बढ़ गई जिनशासन की कीरत, धन्य है मांगीतुंगी तीरथ,
बन गई तेरी सुंदर मूरत।।सारे.।।3।।
युग युगों तक अमर जैनशासन हुआ।
'चन्दनामती' अमर जैन आगम हुआ।।
आगम का प्रमाण दरशाया, मूर्ति सांगोपांग बनाया,
जैनीध्वज नभ में लहराया।।सारे.।।4।।

जाप्य मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ऋषभदेवाय नमः।

भजन

रचयित्री-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज–ए री छोरी बांगड़ वाली.....

सबसे ऊँची ऋषभदेव की प्रतिमा जहाँ बनाया है,
उस मांगीतुंगी तीरथ पर अतिशय देखो छाया है.....2।।टेक.।।

विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा, पर्वत पर यहाँ प्रगट हुई।
ऋषभदेव भगवान की एक सौ-अठ फुट मूरति प्रगट हुई।।
गणिनीप्रमुख ज्ञानमति माता ने अतिशय प्रगटाया है.....2।।
मांगीतुंगी...।।1।।

दिव्यशक्ति सम माता ने, यह दिव्य प्रेरणा दी सबको।
भक्तों ने निज धन को लगाकर, पूर्ण किया उनके प्रण को।।
कर्मयोगी स्वामी जी ने अपना कर्तव्य निभाया है....2।।
मांगीतुंगी.....।।2।।

महापंचकल्याणक एवं महाकुंभ उत्सव आया।
प्रथम महा मस्तकाभिषेक का पुण्य योग अवसर पाया।
हम सबने ''चन्दनामती'' अपना सौभाग्य सराहा है.....2।।
मांगीतुंगी...।।3।।

भजन

रचयित्री-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज–चांदनपुर के गाँव में. .....

मांगीतुंगी तीर्थ से आमंत्रण आया है,
हम सब मांगीतुंगी जाएंगे।
मांगीतुंगी जाएंगे, वहाँ पंचकल्याण रचाएंगे।।
मांगीतुंगी.....।।टेक0।।

विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा, पर्वत पर वहाँ प्रगट हुई।
ऋषभदेव भगवान की इक सौ अठ फुट प्रतिमा राज रही।।
उसी के पंचकल्याणक का अब अवसर आया है,
हम सब मांगीतुंगी जाएंगे।।1।।

विश्वविभूती ज्ञानमती, माताजी की यह महिमा है।
सन् उन्निस सौ छियानवे के, चातुर्मास की गरिमा है।।
उनकी ही प्रेरणा का प्रतिफल सम्मुख आया है,
हम सब मांगीतुंगी जाएंगे।।2।।

विश्व के आश्चर्यों में यह आश्चर्य प्रथम बन जाएगा।
सारा जग इस वीतराग प्रतिमा को शीश नमाएगा।।
पंचमकाल में पहला स्वर्णिम अवसर आया है,
हम सब मांगीतुंगी जाएंगे।।3।।

सभी दिगम्बर जैनों ने अपनी अर्थांजलि दी इसमें।
तभी ''चन्दनामती'' आज प्रतिमा प्रगटी है पर्वत में।।
अब रवीन्द्रकीर्ति ने सब भक्तों को बुलाया है,
हम सब मांगीतुंगी जाएंगे।।4।।

शांति मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं शांतिनाथाय जगत् शान्तिकराय सर्वोपद्रव शान्तिम् कुरु कुरु ह्रीं नमः।

BHAJAN

Music :—Chandanpur ke Gaanva Mein....

A holy message has come, from Mangitungiji,
We will go to Mangitungi.
We will go to Mangitungi, you will go to Mangitungi—2.
Highest Idol of Lord Shri Rishabhdev situated there.
Supreme Sadhvi Gyanmati Mataji has inspired it.
Very ancient Pilgrimage is Mangitungiji,
We will go to Mangitungi .1.
Idol construction will be completed the earliest.
Panch Kalyanak celebration, then will be held there.
Then entire world will see Mangitungiji,
We will go to Mangitungi. 2.
All of us will do there Mastakabhishek of Jinvar.
All of us will get the Samyak darshan by the prayer.
With happiness "Chandnamati", go to Mangitungiji.
We will go to Mangitungi. 3.